P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शाही मुग़ल महिलाओं के कलात्मक योगदान का विश्लेषण

नज़िया हुसैन
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
जयपुर

सारांश

प्राचीन दिनों से भारतीय महिलाएं देश के समाजिक सांस्कृतिक और दार्शनिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी विशेष रूप से मध्ययुगीन भारत में, मुग़ल राजवंशीय शाही महिलाओं की योग्यता पुरुषो के समान ही योग्यता रखती थीस शाही मुग़ल महिलाएँ जैसे हाजी बेग़म, गुलबदन, नूरजहां, जहाँआरा, रोशनारा, जोधा बाई, जैब–उन–निसा, जीनत–उन–नीसा, मुमताजमहल इत्यादि ने न केवल समकालीन राजनीती में प्रमुख भूमिका निभाई बल्कि कलात्मक क्षेत्र योगदान दियास वर्तमान लेखविशेष रूप से कलात्मक क्षेत्र में मुग़ल महिलाओं के सराहनीय योगदान को उजागर करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : शाही मुग़ल महिलाएँ, मध्यकालीन भारत, मुग़ल शासन।

प्रस्तावना

महिलाएँ पौराणिक दृष्टि से सम्मानजनक अस्तित्व रखती हैस समय के साथ महिलाएँ विभिन्न विधाओं में परांगत होती गई अतः अपनी ऐतिहासिकता दर्ज कराने में पीछे नहीं हटी। मध्यकालीन भारत में मुग़लो का शासन हुआ अतः मुग़लो का कला के प्रति प्रेम किसी से छुपा नहीं है वो सब संगीतकार, निर्माता, साहित्यकार, शिल्पकार, चित्रकार, वस्त्रनिर्माता, व अन्य सभी कलाओ के प्रशिद्ध संरक्षक थे। वास्तव में, 1526 के बाद उस अवधि की कला और वास्तुकला साथ ही साथ की उस अवधि के दौरान, मुस्लिम और हिन्दू कला परम्पराओ और तत्वों का एक सुखद निर्माण का प्रतिनिधित्व करती है। (1) शाही मुग़ल महिलाएं अधिकतम भव्यता व विलासिताप्रिय थी। सभी मुग़ल महिलाएं सुन्दर नक़्क़ाशीपूर्ण महलों में निवास करती थी। ये महल बहुत खुले व शानदार और अलग सिर्फ महिलाओं के लिए उनकी मुग़ल हरम में स्थिति व पद के अनुसार बनवाए जाते थे। इन सब महलों में अपने बाग़ बगीचे, फव्वारे व अन्य सभी सुविधाओं से परिपूर्ण थे। इन तथ्यों की स्पष्टता कोठी, तुर्की सुल्ताना कोठी, जोधा बाई महल, बिलकिस मकानी कोठी, नूरजहां व बंगाली महल जहाँ विभिन्न राष्ट्रों की महिलाएं दिल्ली के लाल किले में और लाहौर किले में रहती थी। ऐसी ही कुछ शाही महिलाओं और उनके हुनर जैसे भवन, मकबरे व बाग़ निर्माण कला की समीक्षा हम इस रिसर्च पेपर में करेंगे। मुग़ल काल के दौरान हमे मुग़ल महिलाओं द्वारा बाबर या हुमायूँ समय के दौरान निर्मित भवन का उल्लेख नहीं मिलता। आमतौर पर कहा जाता है की भारत में किसी भी मुग़ल महिला की देख रेख के तहत बनाया गया पहला स्मारक हुमायूँ का मकबरा है जो की हुमायूँ की एक विधवा हाजी बेगम ने अकबर के समय में बनवाया था। जो (2) बेगा बेगम के नाम से भी जानी जाने वाली हाजी बेगम हुमायूँ की चचेरी बहन और उसकी पत्नी थी। (3) हुमायूँ का मकबरा हुमायूँ की मौत के आठ साल बाद बनवाया गया। (4) उसकी विधवा हाजी बेगम द्वारा दिल्ली में और उसके वह उसकी वफादार परिचर बन गई। (5) भारत में मुग़लों द्वारा बनवाया गया यह पहला बगीचे वाला मकबरा था (6) तथा इस मकबरे के खाके को देखकर ताज महल तैयार किया गया। (7) पर्सी ब्राउन के अनुसार हुमायूँ का मकबरा भारत में भवन कला के ऐतिहासिक स्थल के सबसे कलात्मक उदाहरणों में से एक होने के साथ साथ यह मुग़ल शैली के विकास में एक उत्कृष्ट स्थल माना जाता है। (8) इसका निर्माण 1560 ए .ड़ी. से पूरा हुआ (11) हावेल के अनुसार यह शेरशाह के मकबरे का एक फ़ारसी संस्करण है। यह मकबरा अकबर समय की इमारतों के विपरीत है। फर्गुसन का मानना है की हुमायूँ के मकबरे की सबसे चिन्हित विशेषता इसकी शुद्धता है इसे लगभग डिज़ाइन की गरीबी कहा जा सकता है। (13) साथ ही हाजी बेगम द्वारा 1560 में अरबन सराय 300 लोगो को आवास प्रदान करने के बनवाया गया। (14) मरयम – उज़ – जमानी जोधा बाई द्वारा बाओली जोसात परगना से डेड कोस दूर बयाना में बगीचे के साथ बनवाया गया। (15) जहाँगीर ने अपनी स्मृति में लिखा है यह बाओली वृहत तरीके से

बनवाई गई थी। (16) यह बाओली अभी भी अपनी मौजूदगी दर्ज करती है सनूरजहाँ बेग़म एक अत्यंत सुंदर व हर कार्य में निपुण महिला थी। नूरजहाँ बेग़म की कलात्मक उपलब्धियों में सबसे प्रमुख स्थापत्य कला रही है। कला के क्षेत्र में भवन निर्माण और डिज़ाइन किए गए थे और संरक्षित भी किए गए थे। उनमे से उनके पिता एत्मादौला की कब्रगाह आगरा, नूरजहाँ सराय जालंदर के पास, पत्थर मस्जिद श्रीनगर, जहांगीर का मकबरा शाहदरा व अपना मकबरा लाहौर में बनवाया। नूरजहाँ की देखरेख में उसके पिता एत्मादौला का मकबरा लगभग 6 साल में 1622 पूर्ण हुआ। (17) यह मकबरा पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बनाया गया है और जड़ाऊ तकनीक जिसे पेट्राड्यूरा कहा जाता है उसे काम में लिया गया। सफेद संगमरमर की सतह अर्ध कीमती पथरो से जड़ी गई है।यह तकनीक सौलवी शताब्दी में खूब फली – फूली। (18)यह मकबरा जड़ाऊ तकनीक का भारत का पहला मकबरा है।(19)इसी तरह नूरजहाँ ने कई सराय जैसे नूरमहल सराय जलंदर 1620 में (20) तथा नूरमहल सराय, आगरा। यह जिला नूरमहल में (21) 1632 ए.डी. में तैयार कराया गया। जहाँआरा और रोशनारा कुछ शाही मुग़ल महिलाओ की तरह जिनकी हमने अभी तक चर्चा की है , सक्रिय रूप से निर्माण कार्य में शामिल रही है जिसकी कुछ छाप आज भी मौजूदगी दर्ज करा रही है। वास्तुकला के क्षेत्र में जहाँआरा का योगदान सिर्फ बागो तक ही सीमित नहीं था मस्जिद, सराय , मठ और यह तक की बाज़ार भी शामिल थे। कश्मीर घाटी में राजकुमारी जहाँआरा बेगम साहब के रूप में लोकप्रिय थी तथा 40 ,000 रुपए की लागत से एक उत्कृष्ट कलात्मक शैली में मस्जिद बनाने के लिए जाना जाता है। खास बात यह है की यह धन खुद राजकुमारी द्वारा प्रदान किया गया था। (22) ऐसी ही एक और मस्जिद आगरा में स्थित है जिसे जामी मस्जिद के नाम से जाना जाता इसे बनवाने में भी राजकुमारी ने खुद रूपये प्रदान किये थे। (23) बहुत सी मस्जिदे, कारवाँ सराय, बाज़ार व मकबरे बनवाये इनमे से कुछ बहुत प्रसिद्ध रही है जैसे दिल्ली का चांदनी चौक का बाज़ार जो लाल किले के पास स्थित है। (24) रोशनारा बेगम ने भी अपना मकबरा खुद तैयार करवाया यह दिल्ली के उत्तरी पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यह स्मारक बहुत ही सुन्दर रूप से सफ़ेद संगमरमर के बाहरी भागो पर जड़ाऊ काम से तैयार किया गया है। (25) पुरहनार बानो जो शाहजहां की एक और बेटी थी जिसे रोशनारा बेगम की निगरानी में बनवाये गए मकबरे में दफनाया गया। (26) औरंगज़ेब के शासनकाल में उसकी एक अन्य पत्नी नवाब बाई जो मुहम्मद सुल्तान, मुहम्मद मुअज्जम और बदरुन्निसा की माँ थी उसने फरदापुर में सराय निर्माण कराया और औरंगाबाद के उपनगर में बीजापुर की जगह स्थापना की (27) पर कला के क्षेत्र में सच मायनो में औरंगाबाद के काल में उसकी दो पुत्रियाँ बड़ी बेटी ज़ैब – उन – नीसा और दूसरी बेटी ज़ीनत – उन – नीसा का रहा है ज़ैब – उन – नीसा बेगम ने कई बाग – बगीचे जैसे चार बुर्जी और नवा कौट लाहौर में बनवाया और उसे वही दफनाया भी गया। (28) पर सर यादुनाथ सरकार के मुताबिक उन्हें काबुली गेट के बाहर तीस हज़ार पेड़ो का बगीचे में दफनाया गया। (29) आखिर में हम एक और मुग़ल राजकुमारी जो की जहाँगीर की दूसरी बेटी थी जीनत – उन – नीसा का कलात्मक योगदान सराहनीय है वह चौदह कारवाँ सराय को बनवाने के लिए जानी जाती है।(30) जीनत – उन – नीसा ने बंगाल के साथ उथ को जोड़ने वाला के कई सराय बनवाने की परियोजना शुरू की उसके इस प्रयास की उसके पिता द्वारा बहुत प्रसंशा की एक अत्यंत सुन्दर मस्जिद जिसका नाम जीनत – उन – मस्जिद रखा गया उसने खुद के रुपयों से कराया जो की दिल्ली में स्थित है (32) और उसे वही दफनाया गया पर बाद में उसकी कब्र को कही ओर रखवा दिया गया ब्रिटिश मिलिट्री द्वारा (33) अथवा यह कहा जाता है जीनत – उन – नीसा ने अपने दहेज़ में दिए जाने वाले रुपयों की मांग अपने पिता से की और इसे इस मस्जिद के निर्माण में लगवाया ऐसी बहुत सी महिलाएँ जिन्होंने परदानशीन होकर अपनी कला को उजागर किया।

साहित्यावलोकन

पर्सी ब्राउन – इंडियन आर्किटेक्चर; इस्लामिक पीरियडद्ध बॉम्बे वर्ष 1981, पृ. 96. इस किताब में मुग़लकालीन स्थापत्य कला के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है तथा महिलाओं ने मकबरे व मस्जिद बनवाने में अपना कैसे योगदान दिया वह कौन महिलाये थी स्थापत्य कला में रूचि रखती थी तथा उद्दानो को किस प्रकार महिलाओं ने एक नया रूप प्रदान किया इसका वर्णन इस पुस्तक से प्राप्त होता है।

ए. एस. बेवरिज – अनुवादक गुलबदन बेगम हुमायूँ नामा नै दिल्ली वर्ष 1983, पृ. 219 . इस किताब में बाबर व अकबर के जीवन का सम्पूर्ण वर्णन देखने को मिलता है अथवा बाबर और हुमायूँ की बेगमों के बारे में उल्लेख मिलता है वे किस प्रकार अन्य महिलाओ को अपने कार्यो में सम्मिलित कर सम्पूर्ण राजमहल के जानना कक्ष को बांध कर रखती थी इसका बड़ा ही आश्चर्यजनक लिखित स्वरूप हमे इस में मिलता है।

ई. बी. हवेल – इंडियन आर्किटेक्चर थ्रू दा एजिस; नई दिल्ली द्ध वर्ष 1978, पृ. 160 इस किताब में हमे मध्यकालीन भारत में बने मकबरो, मस्जिदों, बाग–बगीचों व किलो का वर्णन विस्तृत रूप से मिलता तथा मुग़लकालीन महिलाओं का कला के क्षेत्र में योगदान की झलकियां भी साथ–साथ दिखाई गई है खासकर मकबरे बनवाने के तौर तरीके, भवन निर्माण कला को बड़े ही विचित्र रूप इस पुस्तक के द्वारा दर्शाया गया है।

एलिसन बैंक फ़िंडले – नूरजहाँ एम्प्रेस ऑफ़ मुग़ल इंडिया (नई यॉर्क) वर्ष 1993, पृ. 230 यह पुस्तक हमे सम्राज्ञी नूरजहाँ के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करती है तथा नूरजहाँ का विभिन्न कलाओ में योगदान का सुंदर वर्णन किया गया है नूरजहाँ के बनवाए गए मकबरो, सराय, बाग़–बगीचों की जानकारी और स्थापत्य कला की ओर नूरजहाँ का झुकाव को बड़े ही उत्कृष्ट रूप से दर्शाया गया है ।

सर यादूनाथ सरकार अनुवादक , हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब वॉल्यूम – कलकत्ता, वर्ष 1912 पृ. 63. अनुवादक इस पुस्तक के द्वारा औरंगज़ेब के समय में हुए

कला के क्षेत्र बदलाव को दर्शा रहा है साथ–साथ नूरजहाँ का भिन्न–भिन्न कलाओ में परांगत बताया गया है नूरजहाँ ने स्थापत्य व अन्य कलाओ में क्या योगदान दिए तथा उसके द्वारा कौन से निर्माण करवाए गए एवं नूरजहाँ द्वारा किये गए बदलावों का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक के द्वारा कराया गया है।

अब्दुल हमीद लाहौरी, पादशाहनामा, वॉल्यूम –1 पृ. 252. इस पुस्तक में लेखक ने शाहजहाँ के जीवन व किए गए निर्माणों का विस्तृत वर्णन मिलता है तथा वह निर्माण किसको व किसलिए समर्पित किए गए यह दर्शाया गया है।मुमताज़ व शाहजहाँ की पुत्रियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई गई है तथा इस पुस्तक के द्वारा शाहजहाँ के काल में हुए स्थापत्य कला में बदलाव व नए निर्माणों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध पत्र के मुख्य उदेश्य इस प्रकार है–

1. मुग़लकालीन महिलाएँ विभिन्न विधाओं में परांगत थी पर्दे के पीछे रहकर भी वे महिलाएँ कैसे कला के क्षेत्र में योगदान देकर अपना नाम इतिहास के पन्नो में दर्ज करा पाई यह महिलाएँ कौन थी तथा कला का क्षेत्र उन्होंने और कैसे विस्तृत किया जिसका पुख्ता सबूत आज भी मौजूद है।
2. पर्दानशीन मुग़ल महिलाओ की कला के क्षेत्र में रूचि व योगदान सराहनीय हाजी बेगम, जोधा बाई , जहाँआरा, रोशनारा, नूरजहाँ व अन्य कई और महिलाएँ भी थी जिन्होंने कला के प्रति अपना रुझान निर्दिष्ट किया एवं पूरा मध्यकालीन भारत इससे लाभान्वित हुआ।
3. निर्माण कला में मकबरे, सराय, मस्जिदे, बाग – बगीचे इत्यादि मुग़लकालीन महिलाओ की रूचि व उन्हें बनवाने की नई – नई पद्धति ईजाद करने में अग्रणीय रही है जैसे – संगमरमर पर कलाकारी व पेट्राड्यूरा जैसी नई पद्धतियाँ मुग़ल महिलाओं की ही देन रही है।
4. सामान्य जनता की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कई सराय, बाज़ार ओर बागो के निर्माण के पीछे कई मुग़ल महिलाएँ रही है यहाँ तक की कुछ मुग़ल महिलाओं ने तो इन्हे बनवाने में खुद से दान दिया और उनकी देखरेख का भी जिम्मा लिया।
5. नूरजहां इन सब महिलाओं में से अग्रणीय रही है उसकी देखरेख में कई सराय , मकबरे, स्मारक और कई अन्य प्रकार की इमारते बनवाई गई जो कला के प्रसिद्ध व उन्नती की छाप है और आज भी आकर्षण का केंद्र है।
6. मुग़लकालीन महिलाओं ने कला के क्षेत्र को एक नई दिशा प्रदान की एवं कुछ नए आयाम कला को प्रदान किए जिससे उनका नाम भी प्रसिद्ध है व उनके बनवाए गए भवन और कला की बारीकिया आज भी हमे अचरज में डाल देती है।

शोध परिकल्पना

इस शोध की सम्पूर्ण दिशा देने के लिए निम्न परिकल्पनाओं का संरचना करना अत्यंत आवश्यक है जो इस प्रस्तुत शोध को पूरा करने उपयोगी सिद्ध होगी।

1. शाही मुग़ल महिलाओ का कला के क्षेत्र में योगदान का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।
2. पर्दा नशीन रहकर किस प्रकार मुग़लकालीन महिलाओ ने अपना हुनर कला के क्षेत्र में इसका अध्ययन इस शोध का मुख्य हिस्सा रहेगा।
3. कला के क्षेत्र की जानकारी जिसमे मुग़ल महिलाओं ने अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया उसका क्रमबद्ध अध्ययन इस शोध का मुख्य हिस्सा रहेगा।
4. कला के क्षेत्र में परांगत प्राप्त कर किसे प्रकार मुग़लकालीन महिलाओं ने समाज को गौरवान्वित किया यह शोध का मुख्य विषय है।
5. विभिन्न मकबरो, सरायो, मस्जिद व उद्यानों के निर्माणों में मुग़लकालीन की ऐतिहासिक स्थिति का अध्ययन इस शोध में किया जाएगी।

अनुसन्धान पद्धति

अनुसन्धान पद्धति के अनुरूप इतिहास को समझे तो इतिहास की विषय–वस्तु अत्यंत विस्तृत है। भूतकालीन वृतांत न तो फिर से घटित हो सकते है और न ही उनमे स्थिति अनुरूप परिवर्तन कर सकते है। इस शोध पत्र के शोध अनुसंधान की ऐतिहासिक पद्धतियो का उपयोग करेगा साथ ही इस पत्र में शोद्यार्थी सर्वेक्षणात्मक एवं ऐसी कई ओर शोध विधियों को भी अपनाया जाएगा। इतिहास में अनुसन्धान पद्धति के आधार पर शोध करना सरल नहीं है क्योंकि आकड़ो की सत्यता का प्रमाण तथा उपलब्ध साक्ष्यो से छेड़–छाड़ का पता लगाना कठिन है फिर भी शोद्यार्थी वैज्ञानिक तरीके से तथ्यों का पूर्ण व शुक्ष्म निरीक्षण कर सत्य के अनुरूप होगा इसी प्रकार ऐतिहासिक शोध अन्य सभी शोधो से भिन्न है ज्यादा प्रमाणिक सिद्ध होगा।

मुग़लकालीन महिलाओ का कला के क्षेत्र में योगदान

मुग़ल काल के दौरान हमे मुग़ल महिलाओ द्वारा बाबर या हुमायूँ समय के दौरान निर्मित किसी भवन का उल्लेख व ऐतिहासिक का प्रमाण नहीं मिलता आमतौर पर यह कहा जाता है कि भारत में किसी भी मुग़ल महिला कि देख – रेख के तहत बनाया गया पहला स्मारक हुमायूँ का मकबरा है। जो कि हुमायूँ कि विधवा हाजी बेग़म के नाम से जाना जाता था अकबर के समय में बनवाया था साथ ही कई सराय बनवाए जिनमे अरबन सराय मशहूर रहा जिसमे 300 लोगो के रहने का भी इंतजाम किया गया जोधा बाई या हरका बाई जो अकबर की पत्नी व मरयम – उज़ – जमानी जिसने जहाँगीर को जन्म दिया जोधा बाई ने बाओली , बाग व सराय बनवाए जिससे आम जनता बहुत लाभन्वित हुई मेहरुन्निसा जो नूरजहाँ के नाम से प्रसिद्ध रही है जो की लगभग हर कला की पारखी व जानकर थी स्थापत्य कला के प्रति लगाव व योगदान आज भी दृष्टव्य है कई भवन , स्मारक,मकबरे एवं बाग – बगीचे नूरजहाँ ने खुद तैयार करवाए एवं कई नई कला की पद्धतियों की देयता भी रही है जैसे पेट्राड्यूरा इत्यादि मकबरो में अपने पिता एत्मादौल्ला पति जहाँगीर, अपना मकबरा भी तैयार करवाया कई सराय व मस्जिदे जैसे नूरमहल सराय आगरा, नूरमहल सराय जालंदर, पत्थर मस्जिद आदि। शाहजहाँ काल में पत्नी व पुत्रियाँ जो अत्यंत प्रतिभाशाली

थी तथा कला के प्रति बहुत जागरूक थी। उसकी एक अन्य पत्नी अकबराबादी महल थी। अकबराबादी महल ने अकबराबादी मस्जिद, बाओली और सराय भी बनवाए। शाहजहाँ की दो बेटियाँ जहाँआरा और रोशनारा बेग़म ने भी कला की ओर अपना लगाव दर्शाया जहाँआरा बेग़म ने कश्मीर की घाटी में मस्जिद, आगरा में एक ओर मस्जिद , रबत मे स्मारक, कई कारवाँ सराय दिल्ली में, चाँदनी चौक बाज़ार लाहौर और दिल्ली में बनवाया, जहाँआरा ने अपना मकबरा को भी बहुत ही सुंदर तरीके से तैयार करवाया एवं उसी के साथ जुड़ा बाग भी बनवाया जो दिल्ली में आज स्थित है। औरंगज़ेब काल में उसकी पुत्रियाँ ज़ैब– उन – नीसा और ज़ीनत –उन– नीसा बेग़म भी कला प्रेमी थी स ज़ैब– उन – नीसा ने कई उद्यान बनवाए जैसे नवाँ कोट , चार बुर्जी लाहौर व तीस हज़ार पेड़ो वाला बाग जो काबुली गेट के बाहर स्थित है ज़ीनत –उन– नीसा का योगदान भी सराहनीय रहा है। जिसमे कई कारवाँ सराय इत्यादि इनमे कुछ कार्यो की प्रसंशा औरंगज़ेब के द्वारा की गई है एवं कई मस्जिदे जो दिल्ली में स्थित थी ज़ीनत –उन– नीसा की देखरेख में करवाए गए। इन सबकी तरह कई और मुग़लकालीन महिलाएं रही है जो स्थापत्य कला की पारखी व ज्ञाता थी जिन्होंने कला के क्षेत्र में अपना योगदान दिया व समाज की लाभान्वित किया।

निष्कर्ष

मुग़लकालीन महिलाएँ भिन्न – भिन्न कलाओ से जुडी रही उनमे स्थापत्य कला का विशेष महत्व रहा है जिसकी झलक आज भी मौजूद है तथा वर्तमान लेख विशेष रूप से कलात्मक क्षेत्र में मुग़ल महिलाओ के सराहनीय योगदान जगचर्चित है सराय, मकबरे ,स्मारक व बाग – बगीचे का निर्माण बहुल रूप से मुग़लकालीन महिलाओ ने भिन्न – भिन्न समय में करवाया तथा कला के क्षेत्र को एक नया आयाम व दिशा प्रदान हुई जिससे कला का क्षेत्र ओर विस्तृत हुआ। सामन्य जनता की जरूरतों का भी ख्याल रखते हुए इन महिलाओ ने यात्री सराय व बओलिया का निर्माण करवाया जिससे उस काल में समानता निर्दिष्ट हुई कला की कई – नई पद्धतियाँ इजाद करने में इन महिलाओ का हाथ रहा जैसे नूरजहाँ ने पेट्राड्यूरा पद्धति से अपने पिता एतमादौला का मकबरा बनवाया इस नई पद्धति ने आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित किया। यह महिलाए पर्दे के पीछे रहकर भी कला व निर्माण में अपना योगदान देने में सफल रही प्रतिभावान इन शाही मुग़ल महिलाओ का एक सशक्त स्वरूप कला के प्रति रुझान अलग – अलग समय काल में सामने आया तथा अपनी ऐतिहासिकता का प्रमाण आज भी दे रहा है जिससे वर्तमान व भविष्य काल भी लाभान्वित होगा जिससे आने वाली पीढ़ियों की एक नई दिशा मिलेगी स

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *R.C. Mazumdar e., An Advanced History of India Madras, 1978, p-577*
2. *A.S. Beveridge in Gulbadan Begam's Humayun Nama p-219*
3. *वही- 218*
4. *Md. Yasin, Studies: Historical And Cultural (Jammu -Tawi, 1964), p-76*
5. *A.S. Beveridge in Humayun Nama, p- 220 (Sylvia Crowe & Sheila Haywood) The Gardens of Mughal India (Delhi- 1973) p-71(Percy Brown] Indian Architecture (Islamic Period) (Bombay, 1981) p-89*
6. *CroweAnd Haywood] The Gardens of Mughal India] p- 71 (Md.Yasin] Studies: Historical And Cultural p-76*
7. *Md- Yasin, Studies, Historical and Cultural, p-76, James Fergusson, History of Indian and Eastern Architecture] Vol- II (Delhi, 1967) p-290*
8. *Percy Brown, IndianArchitecture (Islamic Period) p-96*
9. *E-B- Havell, Indian Architecture Through the Ages (New Delhi: 1978) p- 160*
10. *CroweAnd Haywood, The Gardens of Mughal India, p- 71*
11. *वही, पृ. 71*
12. *Fergusson, History of Indian And Eastern Architecture, Vol- II, p-290*
13. *Monserrate, The Commentary, tr.J.S. Hoyland (Oxford, 1922), p- 96% Jagdish Narain Sarkar, Mughal Economy (Calcutta, 1987) p- 115 (S-K-Banerji, Humayun Badshah] Vol- II (Lucknow, 1941) p-317*
14. *Tuzuk & i & Jahangir (tr-), Vol- II, p-64-*
15. *वही, पृ. 64*
16. *Ellison Banks Findly, Noorjhan Empress of Mughal India (New York, 1993) p-230 (E-B-Havell, A Handbook to Agra And the Taj (London, 1904) p-87*
17. *Findly Noorjhan--- P- 239*
18. *Findly Noorjhan, P- 231 & 32 (Fergusson History of Indian And Eastern Architecture, Vol-II, p- 305*
19. *Findly, Noorjhan, P- 229*
20. *R.C. Temple in The Travels of Peter Mundy in Europe And Asia] Vol- II (London- 1914) p- 78 n*
21. *Inayat Khan, The Shah Jahan Nama, tr & ed Begley And Desai, p- 458*
22. *Abdul Hamid Lahori] Badshah Nama, Vol- I, pt-II, p-252*
23. *The Sun et Lumiere, show conducted At the Red Fort, Delhi*
24. *C.M.V. Stuart, Gardens of the Great Mughals, pp-109-10*
25. *Yadunath Sarkar tr., Mustaid Khan*s Maasir & i & Alamgiri (Calcutta, 1947) p- 90*
26. *Yadunath Sarkar, History of Aurangzeb] Vol- I (Calcutta,1912) p- 63*
27. *Magan Lal tr. The Diwan of Zeb & un & Nissa (London, 1913), pp- 19 & 20*
28. *Yadunath Sarkar, History of Aurangzeb] Vol- I (Calcutta, 1912) p- 69*
29. *Rekha Mishra] Women in Mughal India] p- 112*
30. *Muni Lal Auranzeb (New Delhi- 1988)] p- 63*
31. *Yadunath Sarkar, History of Aurangzeb, Vol- I, p-70*
32. *वही, पृ. 70*
33. *वही, पृ. 70*